सारस्वतसाधना के आयाम

(आचार्य गोकुलप्रसाद त्रिपाठी स्मृति ग्रंथ)

सारस्वतसाधना के आयाम

(आचार्य गोकुलप्रसाद त्रिपाठी स्मृति ग्रंथ)

संपादक

राधावल्लभ त्रिपाठी

New BBC

न्यू भारतीय बुक कॉरपोरेशन

(दिल्ली) : : (भारत)

All rights reserved. No part of this work may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, microfilming, recording or otherwise, without the prior written permission of the copyright owner and the publisher.

प्रकाशक :

न्यू भारतीय बुक कॉरपोरेशन

208, 2nd -फ्लोर

4735/22, प्रकाशदीप बिल्डिंग

अन्सारी रोड, दरियागंज,

नई दिल्ली-110002

फोन : 23280214, 23280209

E-mail : deepak.nbbc@yahoo.in

प्रथम संस्करण : 2020

© प्रकाशक

ISBN : 978-81-8315-432-1

टाईप सेटिंग : **एस० के० ग्राफिक्स**

दिल्ली–84

मुद्रक : **जैन अमर प्रिंटिग प्रेस,** दिल्ली

भूमिका

सारस्वत साधना के आयाम मेरे पिता आचार्य गोकुलप्रसाद त्रिपाठी के जन्मशताब्दी वर्ष (2019-20) में उनके स्मृतिग्रंथ के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। यह ग्रंथ सात सोपानों में विभाजित है। प्रथम दो सोपान आचार्य गोकुलप्रसाद त्रिपाठी के जीवन, व्यक्तित्व और कृतित्व तथा उनकी जन्मभूमि पर केंद्रित हैं। तृतीय से पंचम तक के तीन सोपानों में आचार्य त्रिपाठी की अप्रकाशित तथा पत्रिकाओं में प्रकाशित दुर्लभ रचनाएँ संकलित की गई हैं। उनके विपुल साहित्य की एक झलक ही इनमें देखी जा सकती है। 1938-39 से लगा कर 1990 तक की पचास से अधिक वर्षों की अवधि में आचार्य त्रिपाठी निरंतर लेखन करते रहे। इसका अधिकांश अप्रकाशित रह गया तथा उनकी पुरानी फाइलों में वर्षों तक बंद पड़ा रहा। शासकीय सेवा में कई जगहों पर स्थानांतर होते रहने के कारण उनके इस हस्तलिखित साहित्य का काफी हिस्सा क्षरित, कालकलवित या लुप्त भी हुआ। पुरानी कापियों या जीर्णशीर्ण कागजों में वर्षों से नरसिंहगढ़ के घर में रखी उनकी रचनाओं को हमारी माता जी श्रीमती शकुंतला त्रिपाठी बड़े जतन से सँभाल कर रखे रहीं। मेरे अनुज श्री बालकृष्ण त्रिपाठी के अथक परिश्रम से उसमें से कुछ सामग्री का पुनरुद्धार हो सका और वह इस ग्रंथ के उक्त तीन सोपानों में सामने आ रही है।

प्रथम सोपान में आचार्य गोकुलप्रसाद त्रिपाठी के पुत्रों, आत्मीय जनों तथा शिष्यों के अंतरंग संस्मरणों के साथ उनकी समग्र जीवनयात्रा का विहगावलोकन है। आचार्य गोकुलप्रसाद त्रिपाठी का रचनासंसार विपुल रहा है, और उन्होंने अनेक विधाओं में अनेक विषयों पर लेखनी चलाई। उनका पी.एच्.डी. शोधप्रबंध *श्रीहर्ष के रूपक* उनके जीवनकाल में 1980 में प्रकाशित हुआ, तथा काव्यकृति *अभिनवसतसई* उनके निधन के पश्चात् 2011 में प्रकाशित हुई। उनके कृतित्व के विवेचन के संदर्भ में उनकी इन दोनों महत्त्वपूर्ण कृतियों का मूल्यांकन भी इस सोपान में प्रस्तुत है। *अभिनवसतसई* पर यहाँ आचार्य 'अभिराज' राजेंद्र मिश्र, आचार्य रमाकांत शुक्ल तथा आचार्य आजादमिश्र 'मधुकर' जैसे देश के मूर्धन्य विद्वानों के तत्त्वचिंतनपरक तथा शोधपरक लेख प्रकाशित हैं। आचार्य 'अभिराज' राजेंद्र मिश्र ने अपने गवेषणापूर्ण लेख में सतसई की परंपरा पर प्रकाश डाला है और इसके संदर्भ में *अभिनवसतसई* के वैशिष्ट्य का प्रतिपादन किया है। आचार्य रमाकांत शुक्ल ने छन्दःशास्त्र की प्रामाणिक जानकारी के साथ *अभिनवसतसई* में दोहाछंद के प्रयोग का

गहरा विश्लेषण किया है। आचार्य आजादमिश्र 'मधुकर' ने इस रचना के परमतत्त्वविमर्श पर दार्शनिक सिद्धांतों की अपनी गहरी समझ और शास्त्रों के अवबोध के साथ प्रामाणिक चिंतन प्रस्तुत किया है। डा. सत्यवती त्रिपाठी तथा डॉ० अर्चना दुबे के लेख भी *अभिनवसतसई* के कतिपय अछूते पक्ष उजागर करते हैं। डॉ० संजय कुमार ने *श्रीहर्ष के रूपक में आचार्य गोकुल प्रसाद त्रिपाठी की समीक्षा दृष्टि* शीर्षक अपने लेख में आचार्य गोकुलप्रसाद त्रिपाठी के इस शोधप्रबंध का तथ्यपरक विवरण दिया है।

द्वितीय सोपान में आचार्य गोकुल प्रसाद त्रिपाठी की जन्मभूमि राजगढ़ और कर्मभूमि नरसिंहगढ़ के साथ मालवा के इतिहास और संस्कृति पर तथ्यपरक तथा गवेषणापूर्ण सामग्री है, जिसमें हमारे इतिहास के अनेक अनछुए पहलू सामने आये हैं। संकलित लेखों में *रियासत राजगढ का संक्षिप्त वृत्तान्त और उसके नरेशका परिचय* तथा *महाभारतमीमांसा के प्रकाशन में राजगढ़ रियासत का योगदान* शीर्षक दोनों लेख महाभारतमीमांसा नामक पुस्तक के भूमिकाभाग से लिये गये हैं। यह पुस्तक मूल मराठी में चिंतामणि विनायक वैद्य के द्वारा लिखित *महाभारतमीमांसा* का हिंदी अनुवाद है। अनुवादक हैं हिंदी पत्रकारिता के पितामह, यशस्वी पत्रकार और साहित्यकार माधवराव सप्रे। पुस्तक के प्रकाशक श्री बालचन्द्र पांण्डुरंग ठकार ने इस बृहत्काय और महत्त्वपूर्ण ग्रंथ के प्रकाशन में राजगढ़ नरेश और यहाँ के दीवान के द्वारा दिये गये सहयोग पर जिस तरह कृतज्ञता प्रकट की है, वह राजगढ़ नगर की सांस्कृतिक परंपराओं का द्योतक है।

राजगढ़ रियासत के सहयोग से सौ वर्ष पहले प्रकाशित इस अनूदित पुस्तक के प्रकाशन का भी यह शताब्दीवर्ष है। इस पुस्तक की ओर ध्यान आकर्षित करने के लिये मैं अपने मित्र प्रोफेसर विजयबहादुर सिंह का कृतज्ञ हूँ।

इसी सोपान में *नरसिंहगढ़ का इतिहास* सन् 1894 में नरसिंहगढ़राज द्वारा प्रकाशित ग्रंथ *मेहताब दिवाकर* से संकलित है। नरसिंहगढ़ के महाराज महताब सिंह के द्वारा आज से 125 साल पहले तैयार करवा कर प्रकाशित कराये गये इस विशालकाय ग्रंथ में नरसिंहगढ़ राज्य की कला, साहित्य, संस्कृति, भूगोल और इतिहास के बारे में दुर्लभ जानकारी है। इसे उन्नीसवीं सदी में हिंदी में लिखा गया एक नया स्थलपुराण कहा जा सकता है।

सौ और सवा सौ साल पहले छपी उक्त दोनों पुस्तकों में उस समय के राजगढ़ और नरसिंहगढ़ के बारे में न केवल दिलचस्प जानकारियाँ हैं, एक मराठी भाषी (श्री ठकार और श्री सप्रे) उस समय जिस तरह की परिष्कृत हिंदी लिख रहे थे और मालवा में भणे-गुने लोग जिस तरह की हिंदी लिखते बोलते थे, उसका नमूना भी इनमें देखा जा सकता है।

नरसिंहगढ़ में वल्लभमत और आर्यसमाज के बीच शास्त्रार्थ शीर्षक लेख भी मेहताब दिवाकर पर आधारित है, जिसमें नरसिंहगढ़ राज्य में हुए एक अनोखे शास्त्रार्थ का वर्णन है। प्रख्यात इतिहासकार प्रोफेसर सुरेश मिश्र के दो लेख इस सोपान में हम गौरव के साथ प्रकाशित कर रहे हैं - *1857 का महानायक शाहजादा फीरोजशाह मालवा में* तथा *महीदपुर का शहीद सदाशिवराव अमीन*। ये लेख पुनः इस तथ्य को सत्यापित करते हैं कि 1857 का स्वतंत्रता संग्राम कोई गदर

नहीं बल्कि औपनिवेशिक सत्ता के खिलाफ क्रांति का शंखनाद था जिसमें मालवभूमि ने तात्या टोपे जैसे शहीदों की आश्रयस्थली या कर्मभूमि बनने का गौरव पाया। तात्या टोपे के सहकर्मी दो सर्वथा अज्ञात शहीदों की चर्चा अब तक दुर्लभ जानकारियाँ जुटाते हुए मिश्र जी ने इन लेखों में की है, जिनमें पहली बार मालवा के प्रसंग के साथ शाहजादा फीरोजशाह और सदाशिवराव अमीन की शहादत की भूली बिसरी गाथा सामने आ सकी है। मिश्र जी का विस्तृत शोधकार्य इस विषय में अंग्रेजी में प्रकाशित है। उन्होंने अपनी पुस्तक में शाहजादा फीरोजशाह के बारे में मालवा में उस समय रचे गये और गाये जाने वाले एक लंबे मालवी गीत को को भी उद्धृत किया है, जिससे इस पूरे क्षेत्र में उस समय इस शाहजादे की लोकप्रियता का पता चलता है।

संस्कृतायतिः शीर्षक तृतीय सोपान में आचार्य गोकुल प्रसाद त्रिपाठी की बीस संस्कृत कविताएँ, गीत या भजन, एक खंडकाव्य, संस्कृतसाहित्यविषयक कतिपय लेख संकलित हैं। उनकी संस्कृत कविताओं में भक्ति भावना, प्रशस्ति और प्रेम तथा सौहार्द के भाव प्रांजल, सरस शैली में व्यक्त हुए हैं। *परिवारस्मरणम्* उनका मार्मिक खंडकाव्य है। 1967 में छतरपुर के महाराजा महाविद्यालय से उनका सीधी के महाविद्यालय में स्थानांतर कर दिया गया। सुदूर दुरूह स्थान में परिवार को ले जाना संभव न था। परिवार से दूर रहने की पीडा तथा स्वजनों के प्रति स्नेहकातरता को इस काव्य में करुण अभिव्यक्ति मिली है। पत्रम् शीर्षक पद्यबद्ध संस्कृत पत्र आचार्य गोकुलप्रसाद त्रिपाठी के द्वारा प्रस्तुत लेखक को भेजा गया था। 1987 में प्रकाशित अपना संस्कृत काव्य संकलन सन्धानम् मैंने उन्हें समर्पित किया था। वे इससे प्रसन्न हुए। इसकी पहली प्रति पाते ही उन्होने यह पत्र लिख कर भेजा था। इसमें संपूर्ण कृति की पद्यों में समीक्षा भी कर दी गई है।

आचार्य त्रिपाठी ने संस्कृत में अनेक मौलिक निबंधों का प्रणयन किया। इनमें से दो *जगतः अद्यतनी स्थितिः* तथा *नारीपरिवादविमर्शः* इस ग्रंथ के प्रस्तुत सोपान में दिये जा रहे हैं। महाराजा महाविद्यालय छतरपुर में संस्कृत के स्नातकोत्तर छात्रों के उपयोग के लिये उन्होंने संस्कृत में एक निबंध संग्रह भी तैयार किया था। वह एक पुरानी नोटबुक में था। उसकी प्रति मिल नहीं सकी।

आचार्य गोकुल प्रसाद त्रिपाठी के हिंदी में लिखे गये संस्कृतसाहित्यविषयक बहुसंख्य लेखों में से सात इस सोपान में संकलित हैं। इनमें उनका व्यापक अध्ययन, शोधपरक दृष्टि और प्रतिपादन की मौलिकता का परिचय मिल सकेगा।

काव्यसरणि शीर्षक चतुर्थ सोपान में आचार्य गोकुलप्रसाद त्रिपाठी के हिंदी तथा उर्दू में विरचित भजन, काव्य, ग़ज़ल और अशआर सम्मिलित हैं। *मानसमन्थन* शीर्षक पंचम सोपान में आचार्य गोकुलप्रसाद त्रिपाठी के रामचरितमानसविषयक लेखों में से तेरह लेख संकलित हैं। आचार्य त्रिपाठी मानस में रमे रहते थे, तथा निरंतर उसपर चिंतन-मनन करते रहते थे। जहाँ भी वे रहे, एक विद्वान् प्राध्यापक के साथ साथ मानसप्रवचनकार के रूप में भी उन्होंने प्रतिष्ठा अर्जित की। मानसविषयक उनके अनेक लेखों में नवीन विमर्श है, कुछ लेख सामान्य पाठकों की भ्रांतियों को दूर करने के लिये या मानस के प्रति रुचि जागरित करने की दृष्टि से भी लिखे गये हैं। खेद

है कि इनमें से *रामचरित मानस और राजनीति* तथा *तुलसी की साहित्यशास्त्र को नई देन -- नीति रस* उनके यो दो लेख पूरे नहीं छापे जा सके।

वाङ्मयार्णवमन्थन शीर्षक षष्ठ सोपान में देश के जाने माने विद्वानों, चिंतकों और मनीषियों तथा कतिपय युवा और तेजस्वी समीक्षकों के संस्कृत साहित्य विषयक नवीन लेख संकलित हैं। इन लेखों से संस्कृत और हिंदी साहित्य की परंपरा को ले कर नई समझ पैदा हो सकेगी ऐसा मुझे विश्वास है। इस सोपान में वेद, गीता, रामायण और महाभारत के अनेक अज्ञात पक्ष उद्घाटित हुए हैं। अम्बिकादत्त शर्मा, दयानन्द भार्गव, विन्ध्येश्वरी प्रसाद मिश्र 'विनय' तथा विजयबहादुर सिंह के आलेख इन मनीषी विद्वानों के द्वारा आचार्य गोकुल प्रसाद त्रिपाठी स्मृति व्याख्यानमाला में दिये गये व्याख्यानों के लिपिबद्ध रूप हैं। आचार्य दयानंद भार्गव वेद और गीता के एक ऐसे भाष्यकार हैं, जिनकी विवेचना शंकराचार्य, मधुसूदन सरस्वती और महामहोपाध्याय मधूसदन ओझा की कोटि का आरोहण करती है। आचार्य विजय बहादुर सिंह हिंदी साहित्य के प्रखर समीक्षक तथा भारतीय परंपरा के मर्मज्ञ व्याख्याकार हैं। वे अपने लेखन और व्याख्यानों के द्वारा सुधीजनों को उद्वेलित और आंदोलित करते हैं तथा हमारे समय के ज्वलंत प्रश्नों से उन्हें रू-ब-रू कराते हैं। *तुलसी के मानस का मर्म* शीर्षक यहाँ प्रकाशित उनके व्याख्यान से पाठकों को विजयबहादुर जी की प्रज्ञा का आभास हो सकेगा। *रामायण का सत्य और महाभारत का धर्म* शीर्षक आलेख में हमारे समय के महत्त्वपूर्ण दार्शनिक और विचारक अम्बिकादत्त शर्मा ने वाल्मीकि और व्यास के महाकाव्यों के तारतम्य पर विचार किया है।

वाल्मीकिकृत रामायण और व्यासकृत महाभारत भारतीय साहित्य के दो सबसे बड़े महाकाव्य ही नहीं, वे भारतीय परंपरा, भारतीय मूल्यबोध और जीवनदृष्टि के दो छोर भी प्रकट करते हैं। एक छोर पर राम हैं, दूसरे पर कृष्ण। वे भारतीय मनीषा के दो पहलू हैं। दोनों ही हमारे आराध्य और साध्य भी हैं। एक निगम की परंपरा है और दूसरी आगम की। एक शास्त्र की परंपरा है, दूसरी लोक की। एक में आदर्श का सहज सीधा एकरेखीय मार्ग है, दूसरे में यथार्थ की सहस्रों वीथियों वाले पथ हैं। राम और कृष्ण एक दूसरे के विलोम भी हैं। राम एक पत्नीव्रती हैं, कृष्ण के आठ पटरानियाँ हैं। राम त्याग और अपरिग्रह के मूर्तिमान् उदाहरण हैं। वे सत्य के लिये राज्य को त्याग देते हैं, पत्नी तक को त्याग देते हैं। कृष्ण सर्वस्वीकार के मूर्तिमान् उदाहरण हैं। वे सोलह हजार उपेक्षित और पीडित महिलाओं को स्वीकार करते हैं। राम गुरु और माता के आदेश पर भी सत्यपालन के लिये की गई अपनी प्रतिज्ञा को नहीं तोड़ सकते, कृष्ण भक्त का मन रखने के लिये बार बार अपनी प्रतिज्ञाएँ तोड़ देते हैं। पर दोनों के मार्ग में विरोध नहीं पारस्परिकता है, क्यों कि रामायण का त्याग और अपरिग्रह का मार्ग करुणा में पर्यवसित होता है, महाभारत का धर्म का मार्ग समग्र बौद्धिक विमर्शके साथ शांत में पर्यवसित होता है।

शर्माजी का लेख विश्वसाहित्य के दो श्रेष्ठ महाकाव्यों की इसी पारस्परिकता का संधान है।

आचार्य विन्ध्येश्वरी प्रसाद मिश्र 'विनय' संस्कृत के प्रकांड पंडित और सहृदय कवि हैं।

श्रीमद्भागवत पर उनका जैसा अधिकार है, वैसा अन्यत्र कम ही देखने को मिलता है। *श्रीमद्भागवत-कथाओं की आध्यात्मिकादि-अर्थ-व्यञ्जकता* शीर्षक उनके आलेख में श्रीमद्भागवत के तत्त्वचिंतन का सही परिचय मिलता है। बलराम शुक्ल हमारे समय के सबसे बड़े अधीती युवा पंडितों में से एक हैं। संस्कृत और फारसी भाषाओं तथा उनके साहित्य के ही नहीं, इन दोनों भाषाओं के छंदःशास्त्र के भी वे आधिकारिक विद्वान् हैं। *छन्दःसमीक्षागत लक्षणों की नवीनता एवं उसके निहितार्थ* शीर्षक उनके लेख में छन्दःशास्त्र की गुत्थियों को सुलझाया गया है। डॉ० प्रवीण पंड्या आधुनिक काव्यशास्त्र के आचार्य और तेजस्वी युवा चिंतक हैं। *आधुनिक संस्कृत कविता की दिशा* शीर्षक उनके लेख से पाठक संस्कृत में आज लिखी जा रही कविता की विशिष्टताओं को जान सकेंगें।

सप्तम सोपान का विषय मध्यप्रदेश का संस्कृत साहित्य तथा संस्कृत साहित्य में चित्रित मध्यप्रदेश है। इसमें (स्व०) प्रभुदयाल अग्निहोत्री, कृष्णकान्त चतुर्वेदी, रहस बिहारी द्विवेदी, पुष्पा दीक्षित, भगवतीलाल राजपुरोहित, बालकृष्ण शर्मा, इला घोष, सदाशिव द्विवेदी जैसे देश के शीर्षस्थ संस्कृत पंडितों के विशिष्ट लेख संकलित हैं। *मध्यप्रदेश के महाकोशल, बुन्देलखण्ड और बघेलखण्ड की संस्कृत वाङ्मय को देन, संस्कृत साहित्य में मध्यप्रदेश का योगदान, संस्कृत वाङ्मय में नर्मदा, नाट्यशास्त्र, नाट्यपरंपरा और मध्यप्रदेश; महाभाष्य तथा काशिका वृत्ति में मध्यप्रदेश, संस्कृत वाङ्मय में आवंती और मालव शैली, बाणभट्ट और बघेलखण्ड, मध्यप्रदेश की जीवन ध्वनि ऋतु संहार में, भोपाल का संस्कृत साहित्य को योगदान, ग्वालियर का संस्कृत साहित्य, छत्तीसगढ़ का संस्कृत साहित्य, उज्जयिनी के प्रमुख संस्कृत रचनाकार* - (उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी), *जबलपुर का संस्कृत को अवदान, सागर जनपद का संस्कृत साहित्य को योगदान* आदि शीर्षकों में ही इस सोपान के व्यापक फलक की झलक देखी जा सकती है। मध्यप्रदेश के आधुनिक काल से दो संस्कृत महाकवियों तथा आचार्यों - आचार्य डॉ. बच्चूलाल अवस्थी 'ज्ञान' और 'सनातन' कवि रेवाप्रसाद द्विवेदी के समग्र अवदान का मूल्यांकन प्रस्तुत करते हुए युवा विद्वानों के तीन विशिष्ट लेख भी इस सोपान में संकलित हैं।

प्रयास किया गया है कि सारस्वत साधना के आयाम में इन सातों सोपानों की सारी सामग्री ज्ञान, भक्ति और कर्म का समन्वय प्रस्तुत करने वाले; त्याग, तपस् और साधना के मूर्तिमान् रूप आचार्य गोकुलप्रसाद त्रिपाठी के प्रति एक श्रद्धासुमन बन सके। प्रयास करने पर भी इसके संयोजन और मुद्रण में अनेक त्रुटियाँ रह गईं हैं, जिनका दायित्व मेरा ही है और मैं उनके लिये क्षमाप्रार्थी हूँ। तृतीय, चतुर्थ और पंचम सोपानों की सारी सामग्री तथा षष्ठ सोपान में संकलित कुछ लिपिबद्ध आलेख श्री बालकृष्ण त्रिपाठी के द्वारा सहेज कर मुझे दिये गये, तथा इसमें से कुछ का टंकण कार्य भी उनके द्वारा नरसिंहगढ़ में कराया गया। इसके लिये वे साधुवाद के पात्र हैं। जिन स्वजनों, परिजनों, मित्रगणों का बहुमूल्य लेखकीय या व्यवस्थापकीय सहयोग इस ग्रंथ में प्राप्त हुआ उन सब के प्रति भी आभार निवेदित है।

राधावल्लभ त्रिपाठी

अनुक्रमणिका

भूमिका (v)

प्रथम सोपान

आचार्य गोकुलप्रसाद त्रिपाठी–जीवन, व्यक्तित्व और कृतित्व

1. आचार्य गोकुलप्रसाद त्रिपाठी – वंशावली, जीवन और कृतित्व 3
—महेश प्रसाद त्रिपाठी
2. ऋषिचर्या की प्रतिमूर्ति गुरुवर पं०गोकुलप्रसादत्रिपाठी जी : एक संस्मरण 13
—द्वारकाप्रसाद शर्मा
3. आचार्य श्री गोकुल प्रसाद त्रिपाठी जी के संस्मरण 15
—गोकुल प्रसाद शर्मा
4. रामचरितमानस में तत्त्वचिंतन तथा आचार्य त्रिपाठी जी के संस्मरण 18
—बद्रीलाल स्वर्णकार
5. पिताजी की अविस्मरणीय शिक्षाएँ 21
—ओ०पी० त्रिपाठी
6. पं० गोकुल प्रसाद त्रिपाठी–साहित्यकार तथा पर्यावरणविद् 24
—पवन मेहता
7. श्रद्धांजलि 26
—बद्रीप्रसाद विरमाल
8. संस्मरण 33
—स्मृति उपाध्याय
9. श्रद्धासुमन 35
—मंगला मिश्रा
10. श्रद्धांजलि 37
—(स्व०) भँवरलाल गुप्ता
11. स्वनामधन्य पं०गोकुलप्रसाद जी त्रिपाठी 39
—रेवा प्रसाद द्विवेदी

12. याद रह जाती है 41
—राधावल्लभ त्रिपाठी
13. सतसई की परंपरा और आचार्य गोकुलप्रसाद त्रिपाठी की अभिनव सतसई 56
—'अभिराज' राजेंद्र मिश्र
14. अभिनव सतसई में दोहा छंद के प्रयोग का वैशिष्ट्य 62
—रमाकांत शुक्ल
15. अभिनव सतसई में परतत्त्व चिन्तन 86
—आजादमिश्र 'मधुकर'
16. अभिनव सतसई में शास्त्रसंगति 94
—सत्यवती त्रिपाठी
17. अभिनव सतसई – एक काव्य धरोहर 110
—अर्चना दुबे 110
18. श्रीहर्ष के रूपक में आचार्य गोकुल प्रसाद त्रिपाठी की समीक्षा दृष्टि
—संजय कुमार 114
19. श्री गुरु-माहात्म्य
—बद्रीप्रसाद बिरमाल 123

द्वितीय सोपान
जन्मभूमि और कर्मभूमि

1. मालवा का इतिहास और संस्कृति -*महाभारतमीमांसा* की भूमिका से 127
2. म*हाभारतमीमांसा* के प्रकाशन में राजगढ़ रियासत का योगदान 129
—बालचन्द्र पांण्डुरंग ठकार
3. नरसिंहगढ़ का इतिहास (सन् 1894 में नरसिंहगढ़राज द्वारा प्रकाशित 131
प्रकाशित ग्रंथ *मेहताब दिवाकर* से)
4. मालवा का संस्कृत अवदान 140
—भगवतीलाल राजपुरोहित
5. राजगढ़ का संक्षिप्त इतिहास व लोक संस्कृति 150
—गरिमा त्रिपाठी
6. राजगढ़ जिले का इतिहास, भूगोल और पुरातत्त्व 153
—स्मृति उपाध्याय
7. आचार्य गोकुल प्रसाद त्रिपाठी की कर्मस्थली नरसिंहगढ़ 156
—बालकृष्ण त्रिपाठी

8. नरसिंहगढ़ में वल्लभमत और आर्यसमाज के बीच शास्त्रार्थ 165
—राधावल्लभ त्रिपाठी

9. 1857 का महानायक शाहजादा फीरोजशाह मालवा में 175
—सुरेश मिश्र

10. महीदपुर का शहीद सदाशिवराव अमीन 183
—सुरेश मिश्र

तृतीय सोपान

संस्कृतायतिः

आचार्य गोकुल प्रसाद त्रिपाठी की संस्कृत कविताएँ तथा संस्कृतसाहित्यविषयक लेख

1. संस्कृतकाव्यानि 191
2. देववाणी की दिव्यता 214
3. नारी-निन्दा : एक शोध 218
4. श्रीमद्भगवद्गीता और महाकवि कालिदास 233
6. शिक्षा के सम्बन्ध में महाकवि कालिदास के विचार 246
5. प्रेम-सम्पुट – संस्कृत का एक अप्रकाशित खण्ड काव्य 255
6. वेणीसंहार का नायक कौन है? 260
7. संस्कृतसाहित्य में मनस्तत्त्व 277
8. श्रीमद्भगवतगीता का महत्त्व 286

चतुर्थ सोपान

काव्यसरणि

आचार्य गोकुलप्रसाद त्रिपाठी की काव्यरचनाएँ (गीत, भजन, ग़ज़ल तथा उर्दू रचनाएँ)

प्रथम चरण

1. गोकुलगीतांजलि 291
2. विनय - वाणी 292

द्वितीय चरण

विविध काव्य 349

आह्वान-गीत 388

तृतीय चरण

कलाम-ए-गोकुल 404

चतुर्थ चरण

चिन्तनकणिकाएँ 430

पंचम सोपान

मानसमन्थन

आचार्य गोकुलप्रसाद त्रिपाठी के रामचरितमानसविषयक लेख

1. मानस और गीता 465
2. रामचरितमानस और श्रीमद्भागवत 477
3. रामचरितमानस और शिक्षा 483
4. रामचरितमानस में भक्ति 488
5. रामचरितमानस और राजनीति 493
6. तुलसी की साहित्यशास्त्र को नई देन 501
7. तुलसीदास के निन्दकों से 505
8. उनके प्रति जिन्हें तुलसीदास रास नहीं आते 508
9. मानस में अमरत्व साधना 510
10. रामचरितमानस और रघुवंश 524
11. रामचरितमानस और रघुवंश की सांस्कृतिक समस्वरता 527
12. रामचरितमानस और हनुमन्नाटक 530
13. रामचरितमानस और गायत्री मंत्र 533
14. युवजन और रामचरितमानस 537

षष्ठ सोपान
वाङ्मयार्णवमन्थन
वेद, गीता, रामायण, महाभारत सहित संस्कृत साहित्य पर नवीन विमर्श

1. वेद के राम 543
—प्रभुदयाल मिश्र
2. रामायण का सत्य और महाभारत का धर्म 551
—अम्बिकादत्त शर्मा
3. गीता का सार 563
—दयानन्द भार्गव
4. धम्मपद और गीता 569
—सूर्यप्रकाश व्यास
5. रामायण के दण्डक-सन्दर्भ 576
—भास्कराचार्य त्रिपाठी
6. श्रीमद्भागवत-कथाओं की आध्यात्मिकादि-अर्थ-व्यञ्जकता 581
—विन्ध्येश्वरी प्रसाद मिश्र 'विनय'
7. श्रीहनुमान् : प्रथम राजदूत 590
—प्रकाश पांडेय
8. तुलसी के मानस का मर्म 599
—विजय बहादुर सिंह
9. छन्दःसमीक्षागत लक्षणों की नवीनता एवं उसके निहितार्थ 612
—बलराम शुक्ल
10. वर्तमान में नाट्यशास्त्र की उपयोगिता 628
—कृपाशंकर शर्मा
11. संस्कृत साहित्य एवं इतिहास की अवधारणा 635
—पूर्णचन्द्र उपाध्याय

12. मेघदूत का रामगिरि 640
—रामेश्वर प्रसाद मिश्र
13. आधुनिक संस्कृत कविता की दिशा 646
—प्रवीण पण्ड्या

सप्तम सोपान

मध्यप्रदेश का संस्कृत साहित्य तथा संस्कृत साहित्य में मध्यप्रदेश

1. मध्यप्रदेश के महाकोशल, बुन्देलखण्ड और बघेलखण्ड की संस्कृत वाङ्मय को देन 661
—कृष्णकान्त चतुर्वेदी
2. संस्कृत साहित्य में मध्यप्रदेश का योगदान 667
—(स्व०) डॉ० प्रभुदयाल अग्निहोत्री
3. संस्कृत वाङ्मय में नर्मदा 684
—रहस बिहारी द्विवेदी
4. नाट्यशास्त्र, नाट्यपरंपरा और मध्यप्रदेश 693
—राधावल्लभ त्रिपाठी
5. महाभाष्य तथा काशिका वृत्ति में मध्यप्रदेश 698
—पुष्पा दीक्षित
6. संस्कृत वाङ्मय में आवंती और मालव शैली 705
—भगवतीलाल राजपुरोहित
7. बाणभट्ट और बघेलखण्ड 711
—बाल मुकुन्द द्विवेदी
8. मध्यप्रदेश की जीवन ध्वनि—ऋतु संहार में 714
—गुणसागर 'सत्यार्थी'
9. भोपाल का संस्कृत साहित्य को योगदान 719
—ईशनारायण जोशी
10. ग्वालियर का संस्कृत साहित्य 725
—चिं० बा० केलकर
11. छत्तीसगढ़ का संस्कृत साहित्य 732
—(स्व०) कृष्णदेव सारस्वत

12. उज्जयिनी के प्रमुख संस्कृत रचनाकार (उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी) 737
—बालकृष्ण शर्मा

13. जबलपुर का संस्कृत को अवदान 742
—इला घोष

14. सागर जनपद का संस्कृत साहित्य को योगदान 762
—नौनिहाल गौतम

15. आचार्य डॉ० बच्चूलाल अवस्थी 'ज्ञान' जी की कविप्रतिभा 773
—धर्मेन्द्र कुमार सिंहदेव

16. सनातन कवि रेवाप्रसाद द्विवेदी का संस्कृत काव्य 782
—सदाशिव द्विवेदी

17. आचार्य रेवाप्रसाद द्विवेदी की साहित्यशास्त्रीय नवीन स्थापनाएँ 820
—शोभा मिश्रा

लेखकसूची व संकेत 856